आर. एन. आई – राजहिन/2003/9899 डाक पंजीयन संख्या – श्रीगंगानगर/105/2014-2016

मासिक पत्रिका

अजायब बानी

वर्ष : बारहवां अंक : दसवां फरवरी-2015

अमृतवेला 6

परमात्मा की खोज 11

सवाल-जवाब 31

संपादक-प्रेम प्रकाश छाबड़ा

099 50 55 66 71 (राजस्थान)

098 71 50 19 99 (दिल्ली)

उप संपादक-नन्दनी

विशेष सलाहकार-गुरमेल सिंह नौरिया

099 28 92 53 04

096 67 23 33 04

सहयोग-परमजीत सिंह

स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक, मुद्रक व संपादक : प्रेम प्रकाश छाबड़ा ने नेशनल प्रिन्टर्स, नारायणा, नई दिल्ली से छपवाकर सन्तबानी आश्रम 16 पी.एस. रायसिंह नगर – 335 039 जिला – श्री गंगानगर (राजस्थान) से प्रकाशित किया।

e-mail : dhanajaibs@gmail.com | Website : www.ajaibbani.org

प्रकाशन दिनांक 1 फरवरी 2015 -155- मूल्य – पाँच रुपये

आपे तारे ते तारनवाली

आपे तारे ते तारनवाली, आई ऐ इक, रब दी जोत निराली,(2)

1. ओह तां करदा संभाल सारे जग दी, जो-जो वी आवे,
आ के सुत्तियां ओह रूहां नूं जगोंदा, अते नाम जपावे,(2)
भरे झोलियां ना रखदा खाली,
आई ऐ इक रब दी जोत .....

2. ओह घट-घट दे विच वसदा, रैहंदा है न्यारा,
ओह करे भगतां दी रखया, दंड दुष्टां नूं करारा, (2)
पैज रखदा जो आऐ सवाली,
आई ऐ इक रब दी जोत .....

3. ओहनूं देवी-देवते मनदे, वेदां यश गाया,
ओह जल-थल दे विच वसदा, कोई अंत ना पाया, (2)
ओह कट दा काल दी जाली,
आई ऐ इक रब दी जोत .....

4. ओह कदे सावन बण औंदा, रूहां नूं तारे,
ओह कदे कृपाल सदौंदा, तपदे दिल ठारे, (2)
रूह 'अजायब' दी आ के संभाली,
आई ऐ इक रब दी जोत .....

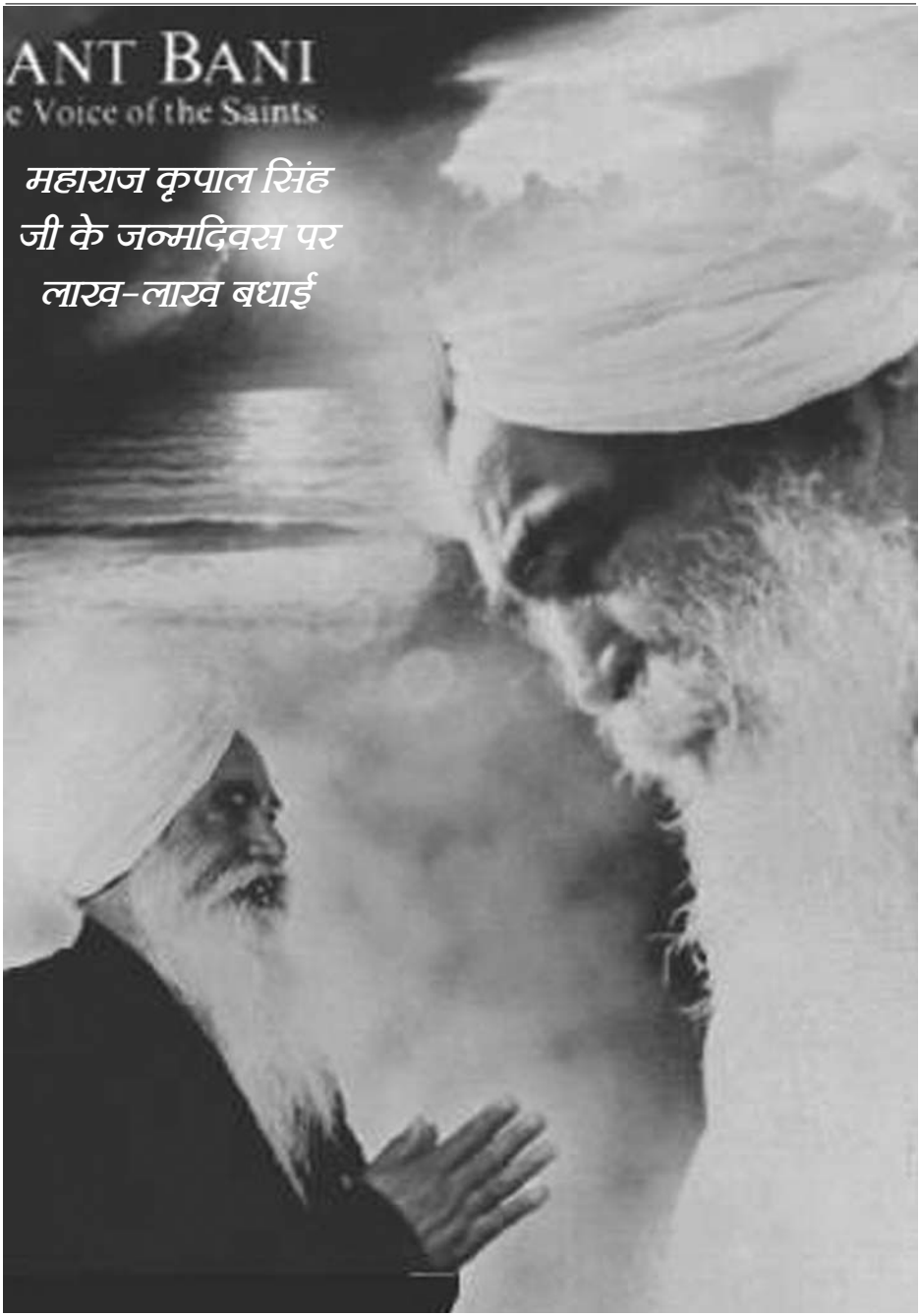
ANT BANI
e Voice of the Saints
महाराज कृपाल सिंह
जी के जन्मदिवस पर
लाख-लाख बधाई

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज द्वारा प्रेमियों को भजन में बिठाने से पहले

अमृतवेला

मैं बचपन से ही उदासी मत में रहा हूँ। उदासी मत में त्याग ही सिखाया जाता था कि किसी की आँखों की तरफ नहीं देखना चाहे वह मर्द है या औरत है। औरत के लिए तो हमें ऐसी ट्रेनिंग दी गई थी कि जिसके ऊपर औरत की छाया पड़ जाए तो साँप भी अंधा हो जाता है।

आप सोचकर देखें! जिसके ऊपर बचपन से ही ऐसे विचार घर कर गए हों उस पर कैसा असर होगा? दुनिया में मेरी हालत मुर्गी के अंडे की तरह थी। मुर्गी अंडे को नजदीक करती है कि मैं इसे अपनी गर्मी देकर इसमें से बच्चा पैदा करूं। मेरी जिंदगी में महाराज कृपाल आए तो उन्होंने मुझे अपने परों के नीचे रखा।

महाराज कृपाल सदा कहते थे, ''बेटा! दुनिया में घुल-मिलकर चलना है।'' उनकी इस बात में क्या राज़ था मुझे पता नहीं था? आप सदा मुझसे गले लगकर ही मिलते रहे, वह अहसास लफ्जों में बयान नहीं किया जा सकता।

जब अमेरिकन प्रेमियों से मेरी पहली मुलाकात हुई। एक मियाँ-बीवी मुझसे मिलने के लिए आए। मैं मियां के साथ बात कर रहा था लेकिन मियाँ को ऐसा लगा कि मैं उसमें से ही उसकी पत्नी को दया दे रहा हूँ। मेरे दिल में डर बिठाया हुआ था कि औरत की छाया भी ठीक नहीं। मुझे जो ट्रेनिंग मिली हुई थी मैं उसमें पक्का था। उसकी पत्नी ने परेशान होकर एक अमेरिकन प्रेमी जो थोड़ी बहुत हिन्दी जानता था और पप्पू के भी नजदीक था उससे जिक्र किया कि जब मैं पहली बार हिन्दुस्तान गई थी तो मेरे लिए वहाँ

वक्त गुजारना बहुत मुश्किल था क्योंकि सन्त जी मेरे पति को दया दे रहे थे फिर उसने मुझे लिखकर भी बताया कि मैं आपकी प्यारी बेटी हूँ क्या आप मुझे सीधी दया नहीं दे सकते?

पप्पू ने उस बात का मुझसे जिक्र किया। पप्पू के दिल में यह ख्याल था कि वह निन्दा करती है। तब मैंने पप्पू से हँसकर कहा, ''वह जो कुछ कहती है सही है लेकिन मेरे बस में नहीं।''

कोलंबिया में महाराज कृपाल की मौज थी क्योंकि संगत में इतना जज्बात उसकी दया के बिना मुश्किल होता है। वह जज्बात यह था कि जो प्रेमी मेरी कमर के पास था वह मेरी कमर को चूम रहा था। मेरे हाथ जिसके हाथ में आए वह मेरे हाथों को चूम रहा था। मेरा जो अंग जिसके नजदीक था वह उसे चूम रहा था। बाकी सैंकड़ो प्रेमी एक-दूसरे को चूम रहे थे कि यह सन्त जी के साथ लगा हुआ है; आधे घंटे तक इस तरह का जज्बात होता रहा।

मैं बताया करता हूँ कि सन्त सोते नहीं। सोते वे लोग हैं जिनकी आत्मा तीसरे तिल से नीचे आ जाती है, सन्तों की आत्मा ऊपर होती है; उनका चलते-फिरते अपने प्यारे के साथ मिलाप होता रहता है। उस समय गुरु कृपाल प्रत्यक्ष ही डाँटकर कह रहे थे, ''इसमें तेरा क्या नुकसान है तुझे मिलकर चलना पड़ेगा।'' इससे मेरी शर्म खत्म हो गई। अब मैं संगत के साथ जैसे मियां से मिलता हूँ वैसे ही बीवी से मिल लेता हूँ। अब मुझे कोई परेशानी नहीं होती लेकिन यह मेरे बस में नहीं था क्योंकि मैंने सारी जिंदगी इसी तरह का जीवन व्यतीत किया था।

जब परमात्मा कृपाल से मेरी पहली मुलाकात हुई तो मैंने रोकर आपसे यही कहा, ''मैं आपको एक कुँवारी लड़की की तरह

मिला हूँ, मैंने अपना दिल-दिमाग संभालकर रखा हुआ है।'' मुझे पहली बार आपसे गले लगकर मिलने का मौका मिला, आप सदा ही मुझसे गले लगकर मिलते रहे। अब मैं आपकी दया से प्रेमियों से घुल-मिलकर मिलता हूँ। मैं परमात्मा कृपाल का धन्यवाद करता हूँ कि मुझे संगत में मिक्स करने का यह उनका एक तरीका था।

मेरे पिता के घर में अनार और आम का बाग था अगर माता ने अनार या आम तोड़कर दे दिया तो मैंने खा लिया होगा। मुझे पक्की तरह याद है कि मैंने वहाँ भी अपना नियम नहीं तोड़ा हाँलाकि मैं उस बाग का मालिक था क्योंकि हिन्दुस्तान में रिवाज है कि बेटा ही जायदाद का मालिक होता है। उसके बाद मैं सरदार रतन सिंह के बाग में रहा हूँ वहाँ नींबू, मौसमी और आम के बाग थे लेकिन मैं वहाँ भी पक्का रहा अपने अभ्यास में लगा रहा।

जो इंसान दुनियावी नियम का पालन नहीं कर सकता वह अंदर कैसे पालन करेगा? इसलिए मैं विषय-विकारों को जहर समझकर इनसे बच सका। मेरे ऊपर शब्द-रूप गुरु कृपाल ने गुप्त

रूप में और प्रकट होकर भी रहम किया आज भी उसकी रहमत बरस रही है; आपको उसी की दया मिल रही है।

प्रभु और गुरु का प्यार बयान नहीं किया जा सकता, यह एक अकथ कथा है। हमें गुरु परमात्मा के प्यार की समझ उस समय आती है जब हम अनुभव प्राप्त कर लेते हैं। अनुभव तभी प्राप्त करते हैं जब हमारा मन दुनिया से पलटकर अंदर नेहचल होकर टिक जाता है फिर संसार रूपी विषय-विकार के बीज की जरूरत नहीं होती। यह एक गूंगे के लिए शक्कर खाने के बराबर है। प्रेम की यह दात हमें सतगुरु बख्शता है, प्यार के फल लगते हैं। जो शिष्य बाहर से ख्याल को हटाकर अंदर पलटा देते हैं वे अंदर मीठे फलों का रस प्राप्त करते हैं। कबीर साहब कहते हैं, ''मैं इस फल को चख न सकता, यह महिमा मेरे सतगुरु की है।''

गुरु नानकदेव जी कहते हैं, ''मैं किस मुँह से अपने गुरु की बड़ाई करूं वह करण-कारण समर्थ है। मैं गुरु का आसरा लेकर ही विषय-विकारों की आग से बचा हूँ इसलिए मैं उठता-बैठता, सोता-जागता खुद भी गुरु गुरु करता हूँ और आपको भी कहता हूँ कि आप भी गुरु गुरु करें।'' गुरु अर्जुनदेव जी कहते हैंः

कहो नानक प्रभ ऐह जनाई, बिन गुरु मुक्ति न पाईये भाई।

कबीर साहब कहते हैं, ''कलयुग में गुरु के बिना नाम नहीं मिलता, नाम के बिना मुक्ति नहीं। कलयुग में अगर कोई उत्तम से उत्तम साधन है तो वह गुरु की भक्ति, नाम की भक्ति है।''

बड़ा सुहावना मौका है। हमारे सतगुरु ने हम पर अपार कृपा करके अपनी याद में बैठने का मौका दिया है। आँखे बंद करके अपना सिमरन शुरू करें।

***

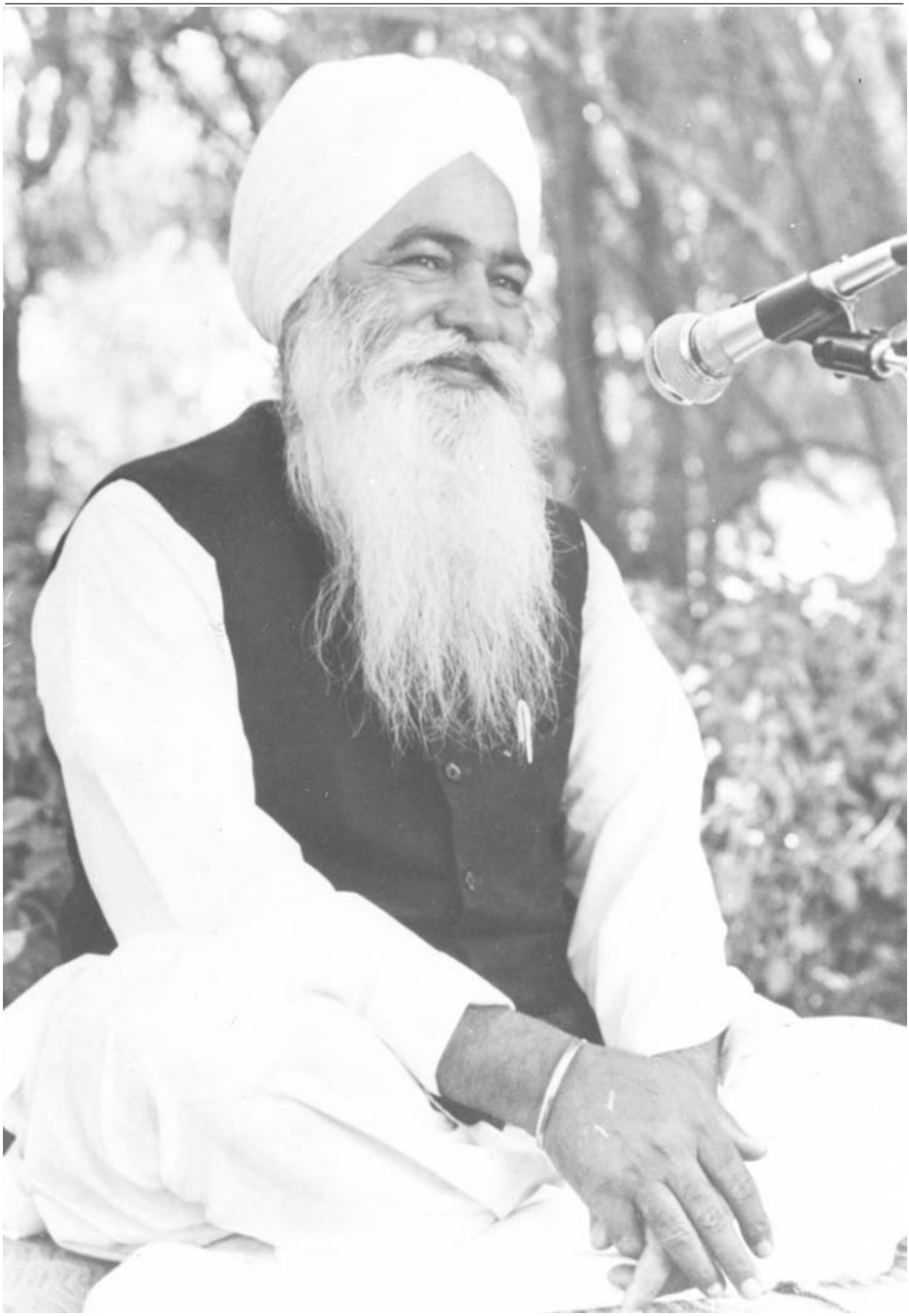

सतसंग- परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज

परमात्मा की खोज

फरीद साहब की बानी

मुम्बई

मैंने पहले भी दो-तीन सतसंगों में बताया है कि यह फुलवाड़ी परमपिता बाबा सावन सिंह जी की है। इस महान हस्ती का जन्म उस वक्त हुआ जब लोग महापुरुषों के बताए हुए उपदेश को छोड़कर प्रभु चेतन हस्ती को पत्थरों और पानी में ढूंढने लग गए। लोग भूल गए कि परमात्मा कहाँ है और उससे कैसे मिलना है?

वह सावन संसार में इस तरह आया जिस तरह सावन के महीने में बहुत बारिश होती है। जिन इलाकों में नहरों का इंतजाम नहीं होता वहाँ के लोग बारिश का इंतजार करते हैं। इसी तरह जिन प्यासी आत्माओं को मालिक से मिलने की चाह थी उनकी प्यास बुझाने के लिए परमात्मा ने सावन का तन धारण किया। भूले जीवों को आकर रास्ता बताया, जो पत्थर पूज-पूजकर पत्थर हो चुके थे उन्हें अपना मुरीद बनाया।

आपने बताया कि परमात्मा किसी रीति-रिवाज से नहीं मिलता, परमात्मा आपके अंदर है और आपके प्यार का भूखा है। सारी कायनात का परमात्मा एक है। परमात्मा किसी समाज या मुल्क की पर्सनल जायदाद नहीं। सारे ही परमात्मा से मिलने के हकदार हैं। ऐसा नहीं कि परमात्मा से अमेरिकन ही मिल सकते हैं हिन्दुस्तानी नहीं मिल सकते। परमात्मा सबका है जो उसे याद करता है वह उससे जरूर मिलता है।

महाराज कृपाल कहा करते थे, ''भूखे को रोटी प्यासे को पानी कुदरत का असूल है जरूर देती है।'' जिन्हें परमात्मा से मिलने की तड़प थी उनके लिए परमात्मा सावन के रूप में आया।

उस समय कुछ गर्म ख्यालों के लोग आपके साथ बहस करने के लिए आते और अपने-अपने रीति-रिवाजों, कर्मकांडो का जिक्र भी करते। आपके आश्रम के आगे बाजे बजाते कि इस तरीके से परमात्मा मिलता है। आप कहते, ''सच्चाई को खुद आँखों से देखें, आप हँसकर कहते कि देखो भई! रब को जगाने वाले आ गए।'' गुरु ग्रन्थ साहब में कबीर साहब की बानी दर्ज है:

मुल्ला मनारे क्या चढ़े साईं न बहरा होय।
जां कारण तूं बांग दे दिल ही भीतर जोय।।

परमात्मा गूंगा-बहरा नहीं, तू ऊँची-ऊँची आवाजे लगा रहा है परमात्मा तेरे अंदर बैठा है। तू सोचता बाद में है वह सुन पहले लेता है। हम सब जानते हैं कि जब हम दान-पुण्य करते हैं किसी धर्मस्थान पर इकट्ठे होते हैं तब पंडितों, ज्योतिषियों से पूछते है कि दान-पुण्य करने के लिए कौन सी तारीख, कौन सा महीना अच्छा है? लेकिन पाप करते वक्त माता पिता से और पिता माता से सलाह नहीं करता, पति पत्नी से सलाह नहीं करता; जिसे जब मौका मिलता है वह फायदा उठाने की कोशिश करता है।

बेशक हम बुराई अंदर बैठकर करते हैं लेकिन वह बाहर प्रकट हो जाती है। आज हम उन बुराईयों का बदला बीमारी, बेरोजगारी और परेशानी से चुका रहे हैं ये हमारे बुरे कर्मों की सजा है। इस देह में बैठकर हम जो थोड़े बहुत अच्छे कर्म करते हैं उनका ईनाम अच्छी बुद्धि, तंदरुस्ती, रोजगार और नेक औलाद है। परमात्मा अंदर बैठकर हमारी हर हरकत को देख रहा है।

आज लोगों ने खोज करने में कोई कसर नहीं छोड़ी अगर परमात्मा भेष धारण करने से मिलता होता तो इससे सस्ता सौदा और क्या हो सकता है? भेष तो दुनिया को बस में करने के लिए

किया जाता है लेकिन परमात्मा किसी भेष से नहीं रीझता अगर परमात्मा भेष से रीझता होता तो बेहरूपिये लोग जो कभी कुछ बन जाते हैं तो कभी कुछ बन जाते हैं वे परमात्मा को फँसा लेते, उन्हें परमात्मा मिल जाता वे मांगते क्यों फिरते?

अगर परमात्मा नहाने-धोने से मिलता तो पानी में रहने वाले जीव मेढ़क, मछलियां परमात्मा को पा लेते, वे आज इन योनियों में कष्ट क्यों उठाते? अगर परमात्मा दान देने से मिलता तो साहूकार लोगों को मिल जाता। अगर परमात्मा पढ़-पढ़ाई से मिलता तो चतुर लोग परमात्मा को पा लेते भोले लोग रह जाते।

महात्मा हमें प्यार से बताते हैं कि परमात्मा से मिलने का साधन और तरीका परमात्मा ने अपनी मर्जी के मुताबिक बनाया हुआ है, कोई परमात्मा के बनाए तरीके को घटा-बढ़ा नहीं सकता। गुरु नानकदेव जी महाराज कहते हैंः

जिसका गृह तिस दिया ताला, कुंजी गुरु सौंपाई।
अनिक उपाय करे नहीं पाय, बिन सतगुरु शरणाई।।

जिस परमात्मा ने यह देह-वजूद बनाया है उसने ही ताला लगाया हुआ है। परमात्मा ताले को खोलने की कुंजी महात्मा को देकर संसार मंडल में भेजता है। यह कुंजी कभी गुरु नानकदेव जी, कभी कबीर साहब तो कभी महाराज सावन के पास रही। परमात्मा जिसे चाहे यह कुंजी देकर संसार में भेज सकता है। आप मन-बुद्धि से जितने भी उपाय कर लें परमात्मा को प्राप्त नहीं कर सकते।

मुझे जिंदगी में बहुत से कर्मकांड करने का मौका मिला है। मैंने धूनिया तपाई, जलधारा वगैरहा किए। मैंने ये कर्मकांड बहुत श्रद्धा से किए लेकिन मुझे शान्ति नहीं मिली। जब तक सतगुरु के दर पर जाकर अपना सिर नहीं झुका दिया। कबीर साहब कहते हैंः

ज्यों तिल माही तेल है ज्यों चकमक में आग।
तेरा प्रीतम तुझमें जाग सके तो जाग।।

प्यारेयो! जिस तरह तिल के अंदर तेल है। पत्थर के अंदर अग्नि है। फूल के अंदर खुशबू है। मेहंदी के अंदर रंग है इसी तरह वह परमात्मा आपके अंदर समाया हुआ है अगर आप उसे जगा सकते हैं तो जगा लें, बुला सकते हैं तो बुला लें।

सारे सन्त इस बात को मानते हैं कि यह शरीर परमात्मा के रहने का मंदिर है लेकिन हम इस मंदिर को छोड़कर अपने हाथों से बनाए हुए मंदिरों में परमात्मा को ढूंढते हैं तो परेशानी के सिवाय कुछ हासिल नहीं होता। महात्मा ने हमें समझाने के लिए बाहर ये मंदिर बनाए थे कि किस तरह इनकी सफाई रखनी जरूरी है। यहाँ मीट, शराब, बीड़ी, सिगरट नहीं पीनी क्योंकि यह परमात्मा के रहने की जगह है।

सभी मंदिर, मस्जिद, गुरुद्वारे और चर्च में एक जैसे ही रीति रिवाज होते हैं। जब हम हिन्दुओं के मंदिर में दाखिल होते हैं तो वहाँ सबसे पहले घंटी लगी होती है उसे बजाकर अंदर जाते हैं, अंदर जोत जलती है। जब हम मस्जिद में जाते हैं तो वहाँ लोग चिरागा करते हैं मौलवी ऊँची-ऊँची बांग देता है। जब हम सिक्खों के गुरुद्वारे में जाते हैं वहाँ शंख बजाए जाते हैं, एक अखंड जोत जलाई जाती है जो दिन-रात जलती है। जब हम चर्च में जाते हैं वहाँ मोमबत्ती जलाई जाती है। प्रार्थना करने से पहले घंटे की आवाज पैदा करते हैं। सबके तरीके तकरीबन मिलते-जुलते हैं, सब मजहबों के अंदर एक ही सच्चाई **परमात्मा की खोज** है।

हम बाहर के मंदिरों की तो इज्जत करते हैं वहाँ जूते लेकर नहीं जाते लेकिन जिस मंदिर को परमात्मा ने बनाया है जिसके

अंदर वह खुद बैठा है क्या कभी इस मंदिर की कद्र की, कभी इसके अंदर दाखिल हुए, क्या कभी इसकी सफाई की तरफ ध्यान दिया? अगर बाहर किसी मंदिर, मस्जिद और गुरुद्वारे में गलती से भी कोई दरार आ जाए तो हम परमात्मा के बनाए हजारों हरि मंदिरों को कत्ल कर देते हैं फिर कौम के शहीद कहलवाते हैं। इंसान ईंटो पत्थरों के साथ प्यार करता है लेकिन जिन मंदिरों में परमात्मा खुद बैठा है जो उसने बनाए हैं हम उनके साथ नफरत कर रहे हैं।

मैं रोज आपको फरीद साहब की बानी सुना रहा हूँ। फरीद साहब ने जंगलों में घूमकर तप किया आखिर जब पूरा गुरु मिला तो आपको होश आई। आप जहाँ तप करते थे वहाँ एक शाह सरफ भी रहता था, वह जंगलो-पहाड़ों में **परमात्मा की खोज** कर रहा था। फरीद साहब एक जगह अपनी समाधि लगाकर अंदर जाते थे।

जब शाह सरफ से प्रेम-प्यार की बातें चली तो फरीद साहब ने शाह सरफ से कहा, ''तू जंगलो-पहाड़ो में क्यों मारा-मारा फिरता है? वह खुदा परमात्मा तो तेरे अंदर है। तू काँटो में क्यों अपना वक्त खराब कर रहा है?'' अब फरीद साहब अपनी बानी में बताएंगे अगर तुझे परमात्मा से मिलने का शौक है तो किसी का दिल मत दुखा; दिल दुखाने से बड़ा कोई गुनाह नहीं।

फरीदा जंगल जंगल क्या भवह् वण कंडा मोड़ेंह्।।
वसी रब हिआलीऐ जंगल क्या ढूंढेह्।।
फरीदा इनी निक्की जंघीऐ थल डूंगर भविओम।।
अज्ज फरीदै कूजड़ा सै कोहां थीओम।।

जिन्होंने अभ्यास किया है **परमात्मा की खोज** की है वे कम खाते हैं, कम बोलते हैं। वे जानते हैं कि किस तरह मन के साथ

संघर्ष करना पड़ता है। हमें पता ही है कि सुख का ईलाज दुख है। दुख सहे बिना माता बच्चे को पैदा नहीं कर सकती। जिस तरह सोना खान में से खोदकर निकाला जाता है और मोती प्राप्त करने के लिए गहरे समुद्र में डुबकी लगानी पड़ती है इसी तरह परमात्मा की प्राप्ति के लिए बहुत कुर्बानी की जरूरत पड़ती है।

हम जब ज्यादा खाएंगे तो नींद आएगी आलस्य आएगा। हम दुनियादार खा-खाकर मोटे हो जाते हैं लेकिन अभ्यासी का शरीर ताकतवर नहीं होता। फरीद साहब ने बहुत तप-अभ्यास किए। भूख प्यास सहकर आपका शरीर बहुत दुबला हो चुका था। उस समय ट्रेनों, कारों के साधन नहीं थे, पैदल चलकर सफर करना पड़ता था। आप कहते हैं, ''मैंने इन टांगों से जंगलो-पहाड़ो में बहुत लंबे-लंबे सफर किए हैं लेकिन आज मैं अभ्यास में नहीं बैठ सका शरीर में ताकत नहीं है।'' जब आप बीमार हुए उस समय पेशाब करने के लिए जो बर्तन नजदीक रखा था वह ऐसे दिख रहा था जैसे सौ कोस दूर रखा हुआ है। उस समय आप अपनी अवस्था ब्यान करते हैंः

फरीदा रातीं वडीआं धुख धुख उठन पास।।
धिग तिना दा जीवया जिनां विडाणी आस।।

आप प्यार से कहते हैं कि सतयुग, द्वापर, त्रेता युग में हमने बड़ी लम्बी उम्रें भोगी। ज्यादा सोने से कमर भी थक जाती है लेकिन उन्हें लानत है जो फिर भी इस पराए संसार में गोते खाते हैं। कभी **परमात्मा की खोज** नहीं की, भक्ति नहीं की, परमात्मा के साथ मिलाप नहीं किया; बड़ी-बड़ी लंबी उम्रें रातों को सोकर गुजार दी। उनका क्या जीवन है जिनकी नित दुनिया में पेशी है।

हमारी भी यही हालत है कि मौत के बाद चलो धर्मराज के पास। धर्मराज हमारे कर्मों का कागज देखता है, जहाँ मुनासिब

होता है हमें जन्म दे देता है। अभी उस कलबूत में गए बाद में होते हैं मौत का फरिश्ता पहले ही आँखों के आगे आ जाता है। हमेशा दस नंबरी की तरह हथकड़ी लगी रहती है। हम उस पराए संसार में बैठे हैं जहाँ कोई हमारा दोस्त नहीं।

फरीदा जे मैं होंदा वारया मित्ता आयड़या।।
हेड़ा जलै मजीठ ज्यों ऊपर अंगारा।।

जंगल में फरीद साहब जहाँ तप करते थे आमतौर पर वहाँ एक जस्सा लुहार उनके पास जाया करता था। जस्सा लुहार अपने पेट को पालने के लिए लकड़ियां काटा करता था, वह काफी वृद्ध था। एक दिन उसे रात हो गई उसने सोचा कि ज्यादा लकड़ियां काट लेता हूँ और आज की रात फरीद के पास ही रह जाऊँगा। जब जस्सा लुहार रात को वहीं रूक गया तो उसने सोचा कि जब फरीद रोटी तैयार करेगा खा लेंगे। हम दुनियादार ऐसा ही समझते हैं कि जिस तरह मैं रोज फुलका तैयार करता हूँ यह भी करेगा लेकिन फरीद को तो अपना अभ्यास प्यारा था वह अभ्यास में जुड़ गया। जस्सा लुहार खाने की इंतजार करता रहा कि अब फरीद आवाज लगाएगा कि प्यारेया! आकर खाना खा ले आखिर रात बहुत हो गई भूख ने तंग किया तो जस्सा लुहार ने रोटी मांग ली।

फरीद साहब हँसकर कहते हैं, ''देख भई जस्सा प्यारेया! अगर मेरे पास खाना होता तो मैं तुझे खाना जरूर देता अगर मैं तुझसे झूठ बोलूं तो मेरा तन आग में जल जाए। मैं सच कहता हूँ कि मैं यहाँ मालिक के आसरे बैठा हूँ अगर मैंने खाकर सोना होता तो मैं घर में ही रह सकता था।''

महाराज सावन सिंह जी बताया करते थे कि आपने एक बार काफी लंबी यात्रा की। आपके साथ एक प्रेमी भी था। आमतौर पर

महाराज सावन सिंह जी घर से खाना लेकर सफर करते रहे हैं। आप और परमपिता कृपाल भी होटलों में जाने के शौकीन नहीं थे। आप सारा दिन सफर कर आए। साथ वाले प्रेमी ने सोचा कि महाराज जी कहेंगे कि खाना खा लो लेकिन आपने सोचा कि यह प्रेमी कहेगा तो खाना खा लेंगे। शाम को जब वापिस आ गए तब महाराज सावन ने कहा, ''अगर सन्तों ने देह में रहना हो तभी खाने का ख्याल आता है। उन्हें अंदर कोई और ताकत तृप्त करती है इसलिए जब वे शरीर में आते हैं तभी उन्हें भूख और प्यास है।''

फरीदा लोड़ै दाख बिजौरीआ किक्कर बीजै जट।।
हंढै उंन कताएंदा पैधा लोड़ै पट।।

फरीद साहब कहते हैं, ''जमींदार कीकर के बीज बीजता है लेकिन बिजौर देश की दाखें ढूंढता है, कश्मीर के सेब लोचता है। भेड़ो की ऊन कातता है लेकिन चाहता है पट मुलायम हों; यह कैसे हो सकता है?'' महात्मा कहते हैं:

तारा मीरा साग बीजके स्वाद भालदा खीरां दे।
जी लोचदा अम्ब खान नूं बीजे बीज कलीरां दे।।

आप कहते हैं कि भ्रावा! तू जो बीजेगा उसका फल तुझे खुद ही खाना पड़ेगा। गुरु नानकदेव जी कहते हैं:

खेत शरीर जो बीजया सो अंत खलोया आए।

तुझे अपने ही कर्मों की खेती को काटना है। हम दुनिया में देखते हैं जो मिर्चें बीजता है वह मिर्चें ही काटता है। जो ईख बीजता है वह मिर्चें नहीं काट सकता, ईख ही काटेगा।

मेरे पास बहुत से प्रेमी आकर कहते हैं कि पर्दा खोलें। मैं उन्हें यही सलाह देता हूँ कि आप अभ्यास करें। वे कहते हैं कि

अभ्यास नहीं होता। क्या कभी किसी सोए हुए का भी पर्दा खुला है? अगर कोई जमींदार खेती न करे तो वह कैसे कामयाब हो सकता है? अगर कोई व्यापारी कहे कि बाहर जाकर माल न लाऊं उसका मूल्य न चुकाऊं तो उसका व्यापार किस तरह चलेगा?

यह तो परमात्मा की दया है कि उसने हमें 'नाम' दे दिया है हमनें उसकी कोई कीमत नहीं चुकानी। आप सुबह उठकर अभ्यास करें। कुछ शिष्यों ने गुरु अमरदेव जी के पास जाकर विनती की कि महाराज जी! हमारे ऊपर दया करें। गुरु अमरदेव जी ने उन शिष्यों से कहा, ''आप सबसे पहले अमृतवेला बनाएं।''

फरीदा गलीए चिक्कड़ दूर घर नाल प्यारे नेंह।।
चलां त भिजै कंबली रहां त तुट्टै नेंह।।

फरीद साहब के अंदर तलब लगी हुई है कि कब पर्दा खुले कब परमात्मा से मिलूं! आप कहते हैं कि गली में कीचड़ है लेकिन प्यारे के साथ नेंह लगा हुआ है कि उसे जरूर मिलूं। काम, क्रोध, लोभ, मोह और अहंकार लिपटे हुए हैं, बुद्धि पापों से भारी हो गई है। अगर मैं रहता हूँ तो मेरा नेंह टूट जाएगा लेकिन कंबली पापों से बहुत ही भारी हो गई है।

आप फिर कहते हैं कि मेरी कंबली पर चाहे कितना भी पापों का कीचड़ लगा हुआ है आखिर मैं जिसकी याद में बैठा हूँ वह खुद ही इसे साफ करेगा। जिस प्यारे सतगुरु ने मुझे नाम दिया है मैं उससे जरूर मिलूंगा। सिक्ख इतिहास में जिक्र आता है:

सीधा जाण तो शेर जे रुक जावे, कौन आखदा मर्द दिलेर ओहनूं।
तिल घांड़ी दी पीड़ तो डरे जे कर, कौन पुछदा विच बाजार ओहनूं।
कंघी न हड्ड चिराए विच आरी, कौन सिर उते असवार करे ओहनूं।
सिक्ख होकर धर्म नू लीक लावे, मुँह लावे न गुरु करतार ओहनूं।।

अगर शेर गोली की आवाज सुनकर दूसरी तरफ भागे तो उसे शेर नहीं कहते। शेर का धर्म है कि जहाँ से आवाज आती है वह सबसे पहले वहाँ पहुँचे। अगर तिल बेलन की तकलीफ से डरता है तो उसकी क्या कीमत है? अगर कंघी आरे से अपनी हड्डियां न चिरवा ले तो कौन उसे सिर पर सवार करता है? अगर सिक्ख होकर धर्म को लीक लगाता है तो गुरु उसे मुँह नहीं लगाता। अपना आप कुर्बान करके ही हम उस प्यारे को पा सकते हैं।

भिजौ सिजौ कंबली अल्लाह् वरसौ मेंह।।
जाय मिलां तिनां सजणा तुटौ नाहीं नेंह।।

फरीद साहब कहते हैं, ''मुझे कंबली का फिक्र नहीं बेशक यह कितनी भी भीगी हुई है। मुझे पता है कि नाम मेरे सारे पापों को काट देगा और मेरा अंकुश कर्म साफ कर देगा।''

फरीदा मैं भोलावा पग दा मत मैली होय जाय।।
गहिला रूह न जाणई सिर भी मिट्टी खाय।।

आप प्यार से कहते हैं कि हम अपने सफेद कपड़ों का और अच्छा धन होने का अहंकार करते हैं, सेवा से दूर रहते हैं कि हमारे कपड़े खराब हो जाएंगे। मेरे दिल को यह भुलावा ही था। मेरे काफिर मन को यह पता नहीं कि तेरा जिस्म मिट्टी में मिट्टी बन जाएगा। इस शरीर से जितनी भी सेवा या सिमरन का काम लिया जाए, अहंकार दूर किया जाए तभी पता लगता है कि हमें इस शरीर से फायदा उठाना चाहिए था।

महाराज सावन सिंह जी कहा करते थे, ''जब गरीब-अमीर एक ही चटाई पर बैठकर खाना खाते हैं तो छोटो को उत्साह मिलता है और बड़ों को नीचे होने का मौका मिलता है। जब हम

सब मिलकर सेवा करते हैं तो हमारे अंदर उत्साह पैदा होता है। वह ताकत - गुरु जिसने हमें 'नाम' के साथ जोड़ा है वह खुश होता है कि किस तरह मेरे बच्चे अहंकार से पीछा छुड़वाकर साध-संगत की सेवा में लगे हुए हैं।''

फरीदा सक्कर खंड निवात गुड़ माख्यों मांझा दुध।।
सभे वसतू मिट्ठीआं रब न पुजन तुध।।

फरीद साहब ने सारी जिंदगी अभ्यास किया। आप हम स्वादुओं से कहते हैं, ''शक्कर भी मीठी है, खंड शहद सब कुछ ही मीठा है अगर आप 'नाम' के साथ जुड़ जाएं, नाम को प्रकट कर लें तो उस जैसा स्वाद और कहीं नहीं। जो ताकत उस अमृत नाम में है वह और किसी में भी नहीं।''

फरीदा रोटी मेरी काठ की लावण मेरी भुख।।
जिनां खाधी चोपड़ी घणे सहनगे दुख।।

फरीद साहब जंगल में रहते थे, जब भूख ज्यादा तंग करती तो रोटी मांगकर लाते थे। पहले-पहले आदमी को भूख बहुत तंग करती है। किसी औरत ने फरीद साहब को ताना मारा कि फकीर होकर मांगता फिरता है तुझे शर्म नहीं आती? फरीद साहब ने उसके आगे अपनी व्यथा सुनाई, ''मैं काम, क्रोध, लोभ, मोह और अहंकार पाँचो डाकुओं से बचा हुआ हूँ लेकिन मैं भूख को घटा नहीं सका।'' उस औरत ने कहा, ''फकीरा! मैं गृहस्थी हूँ तू त्यागी है लेकिन मैं तुझे एक सुझाव बताती हूँ कि तू मांगने वाले इस प्याले को हर रोज घिस लिया कर।'' जैसे-जैसे फरीद साहब उस प्याले को घिसते गए उनकी भूख कम होती गई आखिर उन्होंने अपनी भूख पर काबू पा लिया।

फरीद साहब ने अपने पास एक काठ की रोटी रख ली। जब भूख की याद आती तो उसे चक मार लेते। किसी अमीर आदमी ने फरीद साहब को खाना खाने के लिए बुलाया। फरीद साहब ने उससे कहा, ''भ्रावा! अब मेरी खुराक काठ की रोटी है, भूख ही इसका स्वाद है। जिन लोगों ने चिकनी-चुपड़ी रोटी खाई है भजन नहीं किया आखिरी वक्त उन्हें कष्ट होगा। मालिक के प्यारे परमात्मा का शुक्र करते हैं।''

रूक्खी सुक्खी खाय कै ठंडा पाणी पीओ।।
फरीदा देख पराई चोपड़ी ना तरसाए जीओ।।

आप कहते हैं, ''प्यारेया! तेरे भाग्य में जितना धन-पदार्थ लिखा है तुझे उतना ही मिलना है। तू लोगों के महल और कपड़ो की तरफ न देख। अपने दिल को न तरसा उस मालिक का भजन कर, मालिक का भाणां मान।''

अज्ज न सुत्ती कंत स्यों अंग मुड़े मुड़ जाय।।
जाय पुच्छो डोहागणी तुम क्यों रैण विहाय।।

फरीद साहब कहते हैं, ''मैंने आज परमात्मा के साथ मिलाप नहीं किया मेरे अंग टूट-टूटकर जाते हैं। मैं उन दुहागन रूहों से पूछती हूँ कि उनकी जिंदगी की रात कैसे बीतती है जो सदा ही उस मालिक से बिछुड़े हुए हैं?''

पहले-पहले मन को इस तरफ लगाना बहुत मुश्किल है कोई स्वाद नहीं होता कोई दिलचस्पी नहीं होती लेकिन जब मन इस तरफ लग जाता है तो इसे छोड़ना भी मुश्किल है। जब बच्चा पैदा होता है तो बच्चे को पता नहीं होता कि माता के बोबे में मेरी खुराक रखी है। शुरू में बच्चा अपनी माता का बोबा नहीं पकड़ता

अगर पकड़ता है तो उसे दबाता नहीं मुँह दूसरी तरफ कर लेता है। माता बोबे को बच्चे के मुँह के आगे करती है। पशु है तो हम लोग उसका मुँह पकड़कर जानवर के नीचे करते हैं। एक बार उसे स्वाद मिल जाता है तो पशु को रस्सी से बांधना पड़ता है। जानवर के बच्चे को जरा भी खुलने का मौका मिले तो वह सारा दूध पी जाता है। घर के मालिक देखते रह जाते हैं यही हालत बच्चे की है।

यही हालत अभ्यासी की है शुरू-शुरू में इस तरफ लगना मुश्किल है। जिन्हें रस आ गया फिर उनके लिए छोड़ना भी मुश्किल है। हम कह देते हैं कि नींद आ जाती है। अफसोस! ये उनकी हालत है जो अब तक अंदर नहीं गए। गुरु अर्जुनदेव जी महाराज अपने अभ्यास की हालत बताते हैं:

वध सुख रैनड़िऐ पिर प्रेम लगा, घट दुख निंदड़िऐ पिर स्यों सदा पगा।

रात तू बड़ी हो जा, दिन चढ़ेगा तो दुनिया के कारोबार थका देंगे लोगों से मेल-मिलाप होगा। नींद से कहते हैं कि तू दुखों को आवाज लगाती है तू घट जा। अभ्यासी तो कहते हैं कि रात छह महीने की हो जाए, हमारा प्यारे के साथ प्यार लगा हुआ है। गुरु नानकदेव जी अपने अभ्यास के बारे में बहुत प्यार से बताते हैं:

इक तिल प्यारा बिसरे भक्त कनेही होय,

अगर वह एक सैकिंड भी बिछुड़ जाता है तो भक्त के प्यार में दरार पड़ जाती है। मैं उन दुहागन आत्माओं से पूछती हूँ कि तुमने कभी उस प्यारे के साथ मिलाप नहीं किया, तुम्हारी जिंदगी की रात कैसे गुजर रही है? गुरु नानकदेव जी कहते हैं:

अमली जिए अमल खाए, त्यों हर जन जिए नाम ध्याए।

जिस तरह अमली की जिंदगी अमल में होती है इसी तरह अभ्यासी की जिंदगी अभ्यास में ही होती है।

साहुरै ढोई ना लहै पेईऐ नाहीं थाओं।।
पिर वातड़ी न पुछई धन सोहागण नाओं।।

आप प्यार से बताते हैं कि यह संसार आत्मा के लिए ससुराल है, आत्मा सच्चखंड की रहने वाली है; सच्चखंड इसका मायका है। इसने परमात्मा के घर सच्चखंड से बिछुड़कर यहाँ ससुराल में दिल लगा लिया, कभी **परमात्मा की खोज** नहीं की। जिस तरह हमारी लड़कियां शादी के बाद पिता के घर में एक रात भी रहने के लिए तैयार नहीं होती क्योंकि उन्हें ससुराल ही प्यारा लगता है।

आमतौर पर धर्म के ठेकेदार अपने आपको गुरुमुख कहलवाते हैं। इनका मिलाप कभी परमात्मा के साथ नहीं हुआ। इन्होंने जिंदगी में जिस महात्मा की आशा लगा रखी है उसे सपने में भी नहीं देखा। ऐसे लोगों के लिए गुरु नानकदेव जी कहते हैंः

नन्ना नाहें भोग नित भोगे, ना डिट्ठा न संभलया।
गल्ली हों सोहागण भैंणे, कंत न कबहूं मैं मिलया।।

ऐसे लोग कहते हैं कि हमारे पास नाम है, हमारे पास रब है। पति से कभी मिलाप नहीं किया। कभी उससे पूछा नहीं कि तू मुझसे खुश है या नाराज है? हम खुद तो धोखे में हैं और दूसरे लोगों को भी धोखे में डाल देते हैं। अपना जीवन बर्बाद है औरों का बर्बाद कर जाते हैं। धन्य हैं ऐसी आत्माएं जिन्हें कोई गुरु नहीं मिला नाम नहीं मिला वे भी अपने आपको सुहागन कहती हैं।

साहुरै पेईऐ कंत की कंत अगम अथाह।।
नानक सो सोहागणी जो भावै बेपरवाह।।

गुरु नानकदेव जी कहते हैं जो आत्मा यहाँ ससुराल में आकर भी परमात्मा से जुड़ी हुई है वही सुहागन हैं। जो आत्मा उस बेपरवाह कुलमालिक परमात्मा को पसंद आ गई है हम उसके चरण चूमने के लिए तैयार हैं। जो आत्मा उस परमात्मा के घर में मंजूर हो जाती है परमात्मा उन्हें ही नाम देता है उनमें ही नाम जपने का शौक पैदा करता है। परमात्मा खुद ही उन्हें नाम लेने के लिए प्रेरित करता है; मुक्ति नाम में है।

आप गुरु नानकदेव जी की बानी, कबीर साहब की बानी और महापुरुषों के धर्मग्रन्थ पढ़कर तसल्ली कर सकते हैं कि सब महात्मा यही कहते हैं, ''ऊँचे भाग्य हों तो हमें सतसंग मिलता है। उससे ऊँचे भाग्य हों तो हमें सतसंग समझ आता है कि महापुरुष क्या संदेश देकर गए हैं? उससे ऊँचे भाग्य हों तो हमारे दिल में नाम लेने का शौक पैदा होता है, यह तो भाग्य की चीज़ है।'' गुरु नानकदेव जी महाराज प्यार से कहते हैं:

पूर्व कर्म अंकुर जब प्रगटे, भेटया पुरुष रसिक बैरागी।
मिटया अंधेर मिलत हर नानक जन्म जन्म की सोई जागी।।

जन्म-जन्मांतरों का यही अच्छा ईनाम है तभी हमारा किसी साधु के साथ मिलाप होता है। हम उस मिलाप से फायदा उठाते हैं नाम प्राप्त करते हैं फिर जन्मों-जन्मों से सोई हुई हमारी आत्मा जाग जाती है। हम कहते हैं कि हम जाग रहे हैं हम दुनिया की तरफ से जाग रहे हैं लेकिन परमात्मा की तरफ से सोए हुए हैं।

सच्चखंड प्रलय-महाप्रलय में भी बर्बाद नहीं होता हमें उसकी चिन्ता नहीं लेकिन हमने जो नाशवान घर छोड़ जाने हैं हमें उन घरों की चिन्ता लगी हुई है अंदर उनका प्यार लगा हुआ है। हम इससे ज्यादा क्या गफलत की नींद में सोएंगे?

नाती धोती संबही सुत्ती आय नचिंद।।
फरीदा रही सो बेड़ी हिंड दी गई कथूरी गंध।।

फरीद साहब कहते हैं, ''मालिक ने कृपा की नाम दिया। जिस तरह हम झाड़ू से आँगन को साफ करते हैं उसी तरह सिमरन हमारी आत्मा को साफ करता है। परमात्मा ने यह नहीं पूछा क्या तूने स्नान किया है या तेरा अच्छा श्रृंगार है? परमात्मा ने मेरा प्यार देखा अंदर ही प्यार का ईनाम दिया और अपने साथ मिलाप करवा लिया। अब मैं उसके दर पर निश्चिंत होकर सो गई हूँ कि मैं अपने घर पहुँच गई हूँ।''

जिस तरह कस्तूरी के नजदीक थोड़ी सी हींग रख दें तो कस्तूरी की सारी वासना खत्म हो जाती है। इसी तरह जिनके अंदर हौमें-अहंकार है उनकी बेड़ी यहीं मझधार में गोते खा रही है। अहंकार ही हमारे अंदर दीवार बनकर खड़ा हो जाता है। गुरु नानकदेव जी महाराज कहते हैं:

हौं विच आया हौं विच गया, हौं विच खटया हौं विच गया।
हौं विच जम्या हौं विच मुआ, हौं विच स्वर्ग नर्क अवतार।।

यह हौं-में में ही आता-जाता है और हौं-में में ही जन्मता-मरता है। आप फिर कहते हैं:

होमैं बूझे तां दर सूझे, ज्ञान बिहोणा कत कत लूझे।

हम यह समझ लें कि हौं-में क्या चीज है यह कैसे पैदा होती है, इसकी क्या दवाई है?

होमैं दीर्घ रोग है, दारू भी इस माहे।
कृपा करे जे आपणी ते गुरु का शब्द कमाहे।।

बेशक हौ-में लाईलाज मीठी तपेदिक है, यह इंसान को अंदर ही अंदर खत्म कर देती है। इंसान को पता नहीं लगता कि मुझे अंदर क्या चीज खाए जा रही है? जिनके ऊपर परमात्मा दया करता है उन्हें नाम भक्ति में लगा देता है, हम जैसे-जैसे शब्द-नाम की कमाई करते हैं वैसे-वैसे परमात्मा के नजदीक हो जाते हैं।

मैं बताया करता हूँ कि काम, क्रोध, लोभ, मोह और अहंकार की स्थूल गांठ हमारी आँखों के पीछे सूक्ष्म त्रिकुटी में है। हम जब तक अपनी आत्मा से स्थूल, सूक्ष्म और कारण के तीनों पर्दे नहीं उतार लेते इसे त्रिकुटी से ऊपर दसवें द्वार में नहीं ले जाते तब तक हम अहंकार से पीछा नहीं छुड़वा सकते।

जोबन जांदे ना डरां जे सह प्रीत न जाय।।
फरीदा कितीं जोबन प्रीत बिन सुक गए कुमलाय।।

फरीद साहब कहते हैं, ''मैं जाते हुए यौवन से नहीं डरता। जवानी जा रही है बुढ़ापा आ रहा है लेकिन मैं डरता हूँ कि गुरु परमात्मा से मेरा प्यार खत्म न हो जाए। गुरु के प्यार के बिना अनेकों ही यौवन इस संसार में आए और इस तरह कुम्हला गए जैसे पानी के बिना खेती कुम्हला जाती है।''

फरीदा चिंत खटोला वाण दुख बिरह विछावण लेफ।।
एह हमारा जीवणा तू साहिब सच्चे वेख।।

अब आप अपने शब्द-गुरु के आगे विनती करते हैं, ''मेरा बिछोना चिन्ता का है कि तेरे साथ प्यार बना रहे। अभ्यास में जो पापों के काँटे चुभते थे वह चारपाई का बान है, विरह बिछोना है। तू झाँककर तो देख! क्या हम दुनिया के प्यार में मस्त हैं या तेरे प्यार में मस्त हैं? हम तो तेरे दुखों को भी प्यार ही समझते हैं।''

जब गुरु गोबिंद सिंह जी आनन्दपुर का किला छोड़कर आए उस समय विरोधियों ने आपके दो बच्चे दीवार के अंदर चिन दिए और दो बच्चे आपकी आँखों के आगे शहीद हो चुके थे। उस समय आपके पैरों में पहनने के लिए जूते भी नहीं थे फिर भी आपने परमात्मा का धन्यवाद किया। तब आपने प्यार में यह शब्द बोलाः

मित्र प्यारे नूं हाल मरीदा दा कहना।
तुध बिन रोग रजाईयां दे ओढण नाग निवासा दे सहना।
सूल सुराही खंजर प्याला विंग कसाईयां दा सहना।
यारड़े दा सानूं सत्थर चंगा ते भटखेड़यां दा रहना।।

आप उस वैराग में परमात्मा को संदेश दे रहे हैं कि हमें जमीन पर सोना बादशाही के तख्तों से अच्छा है। मालिक के प्यारे दुख आए चाहे सुख आए अपने प्यार में कोई कमी नहीं आने देते बल्कि अपने प्यार को और मजबूत करते हैं।

बिरहा बिरहा आखीऐ बिरहा तू सुलतान।।
फरीदा जित तन बिरह न ऊपजै सो तन जाण मसान।।

अब आप प्यार से बिछोड़े को बताते हैं कि लोग प्यार की बात तो करते हैं लेकिन प्यार को समझते नहीं। बिरह को समझ नहीं रहे बस बिरह कह दिया बात खत्म हो गई। बिरह के बिना कोई गुरु का दिया हुआ सिमरन नहीं कर सकता, सेवा नहीं कर सकता। सच पूछो तो बिरह लोग तुझे जैसा समझते हैं तू वैसी नहीं है। बिरह तू चक्रवती सुल्तान बादशाह है। जिस तन के अंदर बिरह पैदा नहीं होती वह तन मुर्दे जैसा है। गुरु गोबिंद सिंह जी कहते हैंः

कहाँ भयो जो दो लोचन मूँदके बैठ रहयो वक ध्यान लगायो।
न्हात फिरे जो सात समुद्र जो लोक गयो परलोक गवायो।
साच कहो सुण लेहो सभे जन जिन प्रेम कियो तिन ही प्रभ पायो।।

बगुले की तरह समाधि लगा लेना अभ्यास नहीं अगर अंदर प्यार नहीं तो पता नहीं कि मन ने कब वह समाधि खोल देनी है, सबसे पहले प्यार है।

कोई महात्मा अच्छा अभ्यासी सतसंगी था। गुरु अंदर प्रकट हो गया, खुश हो गया। गुरु ने उस महात्मा से कहा, ''क्या माँगता है, इस वक्त जो मांगेगा मैं हाजिर कर सकता हूँ। क्या दुनिया के सुख चाहिए तुझे राजा बना दें?'' उस महात्मा ने कहा, ''अगर आप मुझ पर दयाल हुए हैं, खुश हुए हैं तो मुझे आपकी जरूरत नहीं सिर्फ आपके बिछोड़े की जरूरत है। आप मुझे अपना बिछोड़ा दे दें ताकि मैं आपको याद करता रहूँ बेशक आप मुझे मत मिलें।''

कद्र बिछोड़े दी ओह जाणें, जेहड़ा बिछुड़े अपने यार कोलों।
तंदरूस्त नूं सार की दुखड़े दी, दुख पुछिए किसे बीमार कोलों।।

महाराज सावन सिंह जी को अपने गुरु बाबा जयमल सिंह जी के बिछोड़े का दर्द था। आपको मानने वाले बहुत लोग थे लेकिन यह एक सच्चाई है कि आप बैठे-बैठे रोने लग जाते थे और इतना रोते थे कि कई लोगों के चुप कराने से भी चुप नहीं होते थे। इसी तरह आपके प्यारे बच्चे कृपाल को आपके बिछोड़े का दुख था। जब कभी आप बाहर गए महाराज सावन सिंह जी बात चली तो आपकी आँखो से अपने आप ही पानी निकल आता था।

आज भी आप देख सकते हैं जिनके दिल के अंदर उसका बिछोड़ा है, प्यार है, दर्द है वे अब भी लोगों को आंखों में पानी दिखाए बिना अंदर ही अंदर रोते हैं। सच्चाई तो यह है जब तक आँसू पोछने वाला पास न हो रोने का मजा ही नहीं आता। जब हम गुरु को अंदर प्रकट कर लें फिर ही रोने का मजा है। एक-दूसरे को देखकर आँखों से आँसू निकालने का क्या फायदा?

फरीद साहब कहते हैं, ''मेरा तन विरह से जल रहा है इसकी एक ही मलहम गुरु का बिछोड़ा, गुरु का प्यार और गुरु का मिलाप है।'' आप हमें बाहर से ख्याल हटाकर अंदर जाने के लिए कहते हैं कि जंगलो-पहाड़ो या बाहर किसी भी धर्मस्थान में जाकर आपका मसला हल नहीं होगा आपका मसला इस सच्चे हरि मंदिर के अंदर जाकर ही हल होगा। गुरु अमरदेव जी कहते हैं:

हरि मंदिर ऐहो शरीर है ज्ञान रतन प्रकट होय।

सच्चा हरि मंदिर आपका शरीर है। परमात्मा से मिलने का ज्ञान अंदर जाकर ही होगा। हमें भी चाहिए कि महात्मा के कहे मुताबिक अपने जीवन को ढ़ालें, आत्मा को पवित्र करें ताकि उस मालिक से मिल सकें।

DVD - 81

***

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज द्वारा प्रेमियों के सवालों के जवाब

सवाल-जवाब

एक प्रेमी:- *प्यारे महाराज जी! मैंने सुना है कि आपने बचपन में कुछ गुरु प्यार के शब्द लिखे हैं, जिन शब्दों को हम अक्सर गाते हैं। जिस समय आपने ये शब्द लिखने शुरु किए उस समय आपकी कितनी उम्र थी। हमें यह भी बताएं कि आपको इतने सुंदर और भक्ति वाले शब्द लिखने की प्रेरणा कहाँ से मिली?*

बाबा जी:- हाँ भाई! आपको पता है कि मैंने अपनी जिंदगी का लेखा-जोखा या तारीख का कभी ध्यान नहीं किया। मैं कितने ही दूर कर चुका हूँ या हम किस तारीख को दूर पर गए थे अगर आप इस बारे में मुझसे पूछेंगे तो मेरे पास इसका लेखा-जोखा नहीं। पिछले साल प्यारा रसल मिला था उसने बताया कि आज के दिन हमें मिले हुए बीस साल हो गए हैं। मैंने उसका धन्यवाद किया कि तूने मुझे याद करवा दिया।

मुझे मेरा जन्मदिन भी इसलिए याद रहा क्योंकि मेरी माता हमेशा मेरा जन्मदिन मनाती थी। वह लगभग सारे गांव वालो को बुलाकर भोजन खिलाती थी। मैं बताया करता हूँ कि मेरी माता काफी भक्तिभाव वाली थी। पता नहीं कि उसका गुरु कौन था? पर लगता था कि उसका कोई गुरु था। वह बहुत भजन करती थी। उसने मेरे साथ बहुत प्यार किया और उसने मुझे बहुत अच्छे ढंग से पाला हांलाकि मैंने उसके पेट से जन्म नहीं लिया था।

मेरी माता अपनी जिंदगी की बहुत सी साखियां सुनाया करती थी कि यह संसार स्वपन है, यहाँ से कोई वस्तु साथ नहीं जाएगी। वही अच्छा रहेगा जो 'नाम' जप लेगा, अपने जीवन को सफल

बना लेगा। जो अमृतवेले नहीं उठते उनके बुरे भाग्य हैं। मैं जब रात को जल्दी उठ जाता तो मेरी माता नाराज होती, मुझसे कहती, ''तू जल्दी क्यों उठ जाता है?'' मैं उससे कहता, ''तू खुद ही तो कहती है कि उनके बुरे भाग्य हैं जो अमृतवेले सोते हैं।''

प्यारेयो! बच्चे के ऊपर माता का बहुत बड़ा असर होता है। मुझे परमात्मा की भक्ति की प्रेरणा अपनी माता की तरफ से विरासत में मिली। हर माता चाहती है कि मेरा बच्चा अच्छा और नेक हो। जो प्रेमी बच्चों को प्यार करते हैं मैं उनके साथ तहे दिल से प्यार करता हूँ। जो बच्चों को मारते हैं उन्हें देखकर मेरे दिल को अचरज होता है बुरा महसूस होता है। मैंने बचपन में जो भजन लिखा था उस भजन की दर्द भरी तुक यही लिखी थीः

इक ना लिखीं मेरे, सतगुरु दा विछोड़ा,
भावें छुट जाऐ सारा, संसार लिख दे।

चाहे सारा संसार छूट जाए लेकिन गुरु का बिछोड़ा नहीं लिखना इसे झेलना बहुत मुश्किल है। मैंने इस कड़वे सच को जिंदगी में दो बार देखा है। जब बाबा बिशनदास जी ने चोला छोड़ा उस समय यह बिछोड़ा मेरे दिल में छेद कर गया। जब परमात्मा कृपाल संसार में मेरी आँखों से दूर हुए उस समय मैं पागलों की तरह ही हो गया था।

मैंने इस शब्द में जिक्र किया है कि मेरे माथे पर गुरु की ज्योत लिख दे और मेरे कानों में धुन की आवाज लिख दे। मुझे बचपन से ही ज्योत और नाद का अनुभव होता था। पवित्र आत्मा के अंदर दिन-रात का फर्क नहीं पड़ता लेकिन उस ज्योत और नाद की कोई अगुवाही नहीं कर सकता। नाद इसे ऊपर नहीं खींच सकता जब तक कोई पूर्ण गुरु इसे न जगाए।

मैं बताया करता हूँ अगर आपके घर में सोना, हीरे, मोती दबे पड़े हों और आप बाहर कौड़ी-कौड़ी मांगते फिरें तो आपको उस सोना, मोती, हीरे का क्या फायदा हो सकता है? अगर आपको आपके घर का कोई भेदी मिल जाए, वह बताए कि जब आप यहाँ से जमीन खोदेंगे तो आपको यहाँ से बहुत कीमती सामान मिलेगा! आप अपनी अच्छी जिंदगी बिता सकेंगे। अब आप सोचकर देखें! क्या आप सोना, हीरे, मोती का धन्यवाद करेंगे या प्राप्त करवाने वाले का धन्यवाद करेंगे?

इसी तरह परमात्मा ज्योत रूप, नाद रूप में हम सबके अंदर विराजमान है लेकिन उसके होते हुए हम कई बार जन्म-मरण के चक्कर में लगे रहे; हमने कोई फायदा नहीं उठाया। जब हमारे घर का भेदी परमात्मा कृपाल मिला हमने उससे फायदा उठाया। इसलिए हम दिन-रात उस परमात्मा कृपाल का धन्यवाद करते हैं कि उसने हमें बाहर कौड़ी-कौड़ी मांगते हुओं को विषय-विकारों में लिपटे हुओं को अपने साथ जोड़ा; हमें अपने घर का भेद दिया और अपने घर के अंदर रहने की जगह दी है।

मुझे स्वपन की तरह याद है जब मैं सात-आठ साल का था तो मेरी आत्मा तड़पती थी कि मेरा कुछ खोया हुआ है। मैंने अपने सारे परिवार के सदस्यों की ढ़ेरियां बनाई। मैंने एक-एक ढ़ेरी से सवाल किया कि जब मेरा अंत समय आएगा तू मेरी रक्षा करेगी? अंदर से आत्मा ने जवाब दिया कि तेरी रक्षा करने वाला इनमें से कोई नहीं। मैंने सारी ढ़ेरियां गिरा दी और एक ढ़ेरी के आगे नमस्कार किया कि मुझे तेरा ही आसरा है तू जहाँ है मुझे मिल। मेरे पिताजी यह कौतुक देख रहे थे, उन्होंने मुझसे पूछा, ''तू यह क्या कर रहा था?'' मैंने उन्हें बताया कि मैंने आप सबकी ढ़ेरियां

बनाकर एक-एक ढ़ेरी से सवाल किया था, क्या तुम लोग मेरी मौत के समय आओगे और मुझे यमों से बचा लोगे? लेकिन सबसे यही जवाब मिला कि तेरी मदद कोई नहीं करेगा। मैंने एक ढ़ेरी को रखकर उसे नमस्कार किया है कि मैं तुझे नहीं जानता हूँ, तेरी खातिर मेरी आत्मा तड़प रही है तू जहाँ है मुझे मिल।

पिता जी बड़े भावुक होकर कहने लगे, '' मैंने तेरे लिए इतनी जायदाद बनाई है, अच्छा मकान बनाया है क्या मैं तेरी मदद नहीं कर सकता?'' मैंने कहा, ''मेरा सवाल तो अंदर का है क्या आप वहाँ आऐंगे?'' पिता जी ने कहा, ''यह तो मुश्किल है। उस समय मैं अपना ही बचाव नहीं कर सकूंगा।'' उस समय मैं आठ साल का था। मैंने उसी समय उनकी जायदाद पर थूक दिया कि बाहर की जायदाद मेरे लिए थूक जैसी है।

प्योरयो! जायदाद का तो बचपन से ही मेरे लिए बोझ नहीं रहा, मैंने जायदाद को कौड़ी के बराबर भी नहीं समझा। मुझे तो बचपन से ही परमात्मा की तलाश थी। मुझे बचपन से ही भजन लिखने की आदत थी। मैंने बहुत भजन लिखे थे लेकिन मैंने वह जखीरा संभाला नहीं क्योंकि मैंने कई मकान, कई जगह बदली। मैं जिस जगह से जाता सिर्फ अपने कपड़े ही लेकर जाता था। जब तक परमात्मा रूप गुरु नहीं मिले तब तक मेरे दिल को ये पंसद ही नहीं आते थे; दिन-रात उसी की तड़प लगी हुई है।

***

16 पी.एस. आश्रम में सतसंगों के कार्यक्रमः

27, 28 फरवरी व 1 मार्च 2015

31 मार्च, 1 अप्रैल व 2 अप्रैल 2015